Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.5442, Volume 08, No. 02, April, 2018, pp. 457-460

जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन

डॉ. अरूण कुमार राजोरिया *

विद्यालयों में शिक्षा प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर प्रदान की जाती है। माध्यमिक शिक्षा का एक ऐसा सुनहरा द्वार है जो एक और तो उच्च शिक्षा के लिए द्वार खोलता है और दूसरी ओर रोजगार एवं जीवनापन प्रवेश द्वार खोलता है। राष्ट्र का लोकतांत्रिक ढ़ंग से विकास करने के लिए आवश्यक है कि विभिन्न क्षेत्रों में मध्यवर्गीय कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्ति प्राप्त हो, इस प्रकार के बालक समाज के एक वर्ग से नहीं बल्कि प्रत्येक वर्ग के हो और उनका सर्वांगींण विकास हो।

व्यक्तित्वः

''व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का संगठन है जो वातावरण के साथ उनका अपूर्व समायोजन निर्धारित करता है।'' व्यक्तित्व के विकास पर सबसे अधिक प्रभाव वातावरण का पड़ता है। जन्म से ही मानव निश्चित वातावरण में रहता है। घर का आदर्श, रीति–रिवाज, बोलचाल, आहार सभी बातें बच्चें के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती है। स्टार्ट का मत है कि ''किशोर के व्यक्तित्व पर माता–पिता, घर के सदस्य, मित्रों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। घर की आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था भी अप्रत्यक्ष रूप से बच्चे के विकास पर प्रभाव डालती हैं।

शिक्षा एक प्रकार की प्रक्रिया है जिसके द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व का विकास होता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो किसी समय प्रारम्भ हो और फिर निश्चित समय पर समाप्त हो जाये। हम प्रायः कह बैठते हैं उसने अपनी शिक्षा समाप्त कर ली अथवा उसने अब शिक्षा प्राप्त करना प्रारम्भ किया है। वस्तुतः शिक्षा तभी प्रारम्भ हो जाती है जब बालक का जन्म होता है, बल्कि मनोवैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं जन्म से पूर्व ही शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है। महाभारत के अनुसार अभिमन्यु ने चक्रव्यूह का भेदन अपनी माता सुभद्रा के गर्भ से सीख लिया था। यदि हम यह न स्वीकार करें कि गर्भ में बालक की शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है तो भी इस तथ्य से तो इंकार किया ही नहीं जा सकता कि जन्म के समय से ही शिक्षा आरम्भ हो जाती है। जन्म से प्रारम्भ होकर शिक्षा आजीवन चलती रहती है।

यदि घर के सदस्य शिक्षित है तो उस परिवार के बच्चों के विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ता है, उन्हें उचित आहार प्रदान किया जाता है, शिक्षा का उत्तम वातावरण मिलता है जो बालकों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धि में योगदान प्रदान करता है। परिवार का आकार भी व्यक्ति को महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित करता है। जब परिवार में माता–पिता के अतिरिक्त बच्चों की संख्या अधिक होती है तो व्यक्तित्व पर इस प्रकार के परिवार के आकार का प्रभाव ऋणात्मक पड़ता है। इसी प्रकार से जब किन्हीं माता–पिता के कोई अकेली सन्तान होती है तो यह देखा गया है कि ऐसे माता–पिता अपनी सन्तान को लाड प्यार अधिक करते हैं जिससे बालक के जिद्दी व असामाजिक बनने की सम्भावनाएं अधिक रहती है।

* प्राचार्य, आनन्द शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, शिवाड, सवाई माधोपुर, राजस्थान।

परिवार की आर्थिक स्थिति का व्यक्तित्व पर एक विशेष सीमा तक बड़ा महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह देखा गया है कि अत्यधिक गरीबी में पले बच्चों में हीनता और असुरक्षा की भावनाएं अपेक्षाकृत अधिक देखने को मिलती है। बहुधा गरीब परिवारों में बच्चों के लिये पौष्टिक भोजन और विभिन्न प्रकार की सुविधाओं का अभाव होता है। जिससे इन बच्चों का शारीरिक विकास भी प्रभावित होता है। साथ ही गरीबी के तनावपूर्ण वातावरण का प्रभाव बच्चों के मानसिक विकास और व्यक्तित्व पर भी पड़ता है।

माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यः

माध्यमिक शिक्षा प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है। समय, परिस्थितिनुसार शिक्षा के उद्देश्य बदलते रहते हैं और निर्धारित किये जाते हैं। वर्तमान स्थिति में भारत की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियां तेजी से बदल रही है और नई–नई समस्याएं सामने आ रही है, जिनमें माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व सम्बन्धित समस्याएं भी समाचिन है।

माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यः

- प्रजातांत्रिक नागरिकता का विकास
- आदर्श चरित्र की अभिव्यक्ति
- व्यावसायिक कुशलता का विकास
- नेतृत्व की शिक्षा
- नैतिक एवं मूल्य अवधारणाएं

माध्यमिक शिक्षा में व्यक्तित्व का महत्वः

व्यक्तित्व के विकास पर माता–पिता का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। यदि शिशु को माता–पिता से पर्याप्त स्नेह मिलता है तो उसका व्यक्तित्व भी स्वस्थ और स्नेहपूर्ण होता है। व्यक्तित्व के विकास पर घर के वातावरण का प्रभाव भी पड़ता है। जिस घर में माता–पिता के आपसी सम्बन्ध अच्छे होते हैं उन बालकों का स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व अच्छा पाया जाता है। बालक के व्यक्तित्व पर औपचारिक एवं अनौपचारिक संस्थान भी प्रभाव डालते हैं। अनौपचारिक संस्थाओं में गृह या परिवार आता है। अनौपचारिक संस्थाओं में विद्यालय। विद्यालय का सीधा सम्बन्ध जहां एक ओर शिक्षा प्रदान करने से है वहीं दूसरी और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व से भी है। विद्यालय ही वह स्थान है जहां पहुँच कर बालक–बालिकाएं अपने पशुवत् प्रवृत्तियों का त्याग करता है तथा मानवीय वृत्तियों को अपनाता है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा का महत्व अधिक होता है क्योंकि इस समय वह समाज में अपना स्थान बनाना प्रारंभ कर देता है और अपने भावी जीवन की योजनाएं बनाने लगता है इस प्रकार से माध्यमिक शिक्षा बालक के भूत, वर्तमान और भविष्य का आधार होती है।

परिकल्पनाः

परिकल्पना अनुसंधान कार्य की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। समस्याओं के चयन व परिमारणीकरण के उपरान्त साधारणतया तीसरा चरण परिकल्पनाओं का निर्धारण करने का होता है। इसे अनुसंधान कार्य की नीवं कहां जाता है। किसी भी शोधकर्त्ता के लिए परिकल्पनाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अभाव में कोई निश्चित एवं क्रमबद्ध प्रयत्न सम्भव नहीं है। अनुसंधान कार्य परिकल्पना के निर्माण एवं उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है। परिकल्पना के अभाव में अनुसंधानकार्य उद्देश्यहीन हो जाता है।

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थः

'परिकल्पना' अंग्रेजी शब्द 'हाइपोथीसिस' का हिन्दी अनुवाद है। हाइपोथीसिस ग्रीक के दो शब्दों से मिलकर बना है। इसमें पहला शब्द हाइपो है अर्थात् बिलो जिसका अर्थ होता है 'नीचे'। दूसरा शब्द थिसिस अर्थात् थ्योरी है जिसका अर्थ होता है विचार या सिद्धान्त। इस प्रकार सिद्धान्त से नीचे या सिद्धान्त का पूर्व कथन।

अतः कहा जा सकता है कि परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ होता है एक ऐसा विचार या सिद्धान्त जिसे शोधकर्त्ता अध्ययन के लक्ष्य के रूप में रखता है एवं उसकी जाँच करता है। 'परिकल्पना एक सामयिक अथवा

कामचलाऊ सामान्यीकरण या निष्कर्ष है जिसकी सत्यता की परीक्षा अभी बाकी है। बिल्कुल आरंभिक स्तरों पर परिकल्पना कोई भी अनुमान कल्पनात्मक विचार, सहज ज्ञान या और कुछ हो सकता है जो कि क्रिया या शोध का आधार बन जाता है।'

परिकल्पना निम्न प्रकार हैः

- जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर ए गुण का प्रभाव पड़ता है।
- जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर बी गुण का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सी गुण का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर डी गुण का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर ई गुण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध की परिसीमाएंः

जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का पूर्ण अध्ययन किया जा सकता है, परन्तु समय, साधन और धन के अभाव के कारण जयपुर जिले के सभी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का अध्ययन करना सम्भव नहीं है। अतः जयपुर जिले के दस निजी व दस राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा नो व दस के विद्यार्थियों को आदर्श मानकर चौदह वर्ष से अठारह वर्ष के आयु के विद्यार्थियों का अध्ययन किया गया है।

न्यादर्शः

'एक न्यादर्श में उसकी समष्टि का एक लघु चित्र होता है।'

अतः शोधकर्त्ता ने राजकीय व निजी विद्यालयों के 500–500 छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श के लिये चुना एवं राजकीय व निजी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं पर न्यादर्श निरूपित किया गया।

शोध उपकरणः

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया है, इस शोध कार्य में शोधकर्त्ताओं ने प्रश्नावली के द्वारा जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर शैक्षिक उपलब्धियों के प्रभाव का अध्ययन किया है।

जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के अध्ययन का सांख्यिकी विश्लेषणः

1. ए गुण अन्तर्मुखी बनाम बहिर्मुखीः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
-.02	-.04	-.03	-.011	-.07	-.010	-.04	-.015	-.04	-.08

उपरोक्त तालिका के सह–सम्बन्ध देखने से ज्ञात होता है कि दसों क्षेत्रों में सह–सम्बन्ध नकारात्मक व असार्थक है, क्योंकि .17 जो .05 का मान है, से कम है। अतः इससे ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व ए गुण और गृह वातावरण में कोई सम्बन्ध नहीं है। गृह वातावरण का प्रभा नहीं पड़ता। यदि पड़ता भी है तो नकारात्मक, अतः इससे सम्बन्धित सभी परिकल्पनाएं स्वीकार की जाती है।

2. बी गुण कम बुद्धि बनाम अधिक बुद्धिः

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
-.11	-.21	-.19	-.07	-.15	-.19	+.03	+.09	-.09	-.17

3. सी भावात्मक स्थिरता बनाम अस्थिरता:

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
-.004	-.15	-.04	-.02	-.04	-.13	-.001	-.02	-.16	-.06

4. ई गुण मिलनसार बनाम संकोची:

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
-.02	-.04	-.03	-.011	-.07	-.010	-.04	-.015	-.04	-.08

5 एफ गुण संबंधी बनाम असंयमी:

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
-.002	-.20	-.12	-.03	-.003	-.020	-.004	-.017	-.09	-.15

6 जी गुण योग्य बनाम विवेकी:

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
-.002	-.20	-.12	-.03	-.003	-.020	-.004	-.017	-.09	-.15

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर वातावरण विद्यालय औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रभाव पड़ता है। साथ ही जयपुर जिला राजस्थान की राजधानी होने के कारण नवीन–नवीन नवाचारों का प्रभाव भी उनके व्यक्तित्व पर पड़ता है। साथ ही आधुनिक संसाधनों के उपयोग और उनकी उपयोगिता के महत्व को भी जयपुर जिले में अध्ययनरत् विद्यार्थी समझते हैं। इस प्रकार से जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में छात्रों में शिक्षा के प्रति रूझान परिणात्मक रूप से अधिक अच्छा नहीं है। इसी प्रकार छात्राओं का शिक्षा के प्रति रूझान परिणात्मक रूप से उत्तम है।

जनरल्स:

- ''उज्ज्वल मरूधरा'' राजस्थानी फॉर्टनाइटली न्यूज पेपर, रिसर्च अंक–23।
- इण्डियन एज्यूकेशन ऑब्सट्रेक्ट प्रकाशक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
- ''भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (जनवरी–जून, 2004) भारतीय शिक्षा संस्थान, वर्ष 23, अंक–1
- नया शिक्षक, शिक्षा विभाग, डॉयरेक्टर ऑफ सैकण्डरी एज्यूकेशन, बीकानेर।
- परामर्श, टोडी रमजानीपुरा, जगतपुरा, जयपुर से प्रकाशित।

संदर्भ ग्रन्थ:

- व्यास, हरशिचन्द्रः ''अधिगम और विकास के मनोसामाजिक आधार'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- शर्मा रामनाथः ''व्यक्तित्व'', एच.के. पब्लिकेशन, मेरठ।
- बेस्ट, जे.डब्ल्यू: रिसर्च इन एज्यूकेशन (थर्ड, फोर्थ, फिफ्थ एडीशन) प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा.लि., न्यू देहली, 1977–1986।
- डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, दी हयूमिनिटीज एण्ड सोशल साइंस, यू.एम. आई.कंपनी, यू.एस.ए.।
- अग्रवाल सुभाष चन्द्रः लरनिंग स्टाइल प्रिफरेन्सिज ऑफ सैकेण्डरी स्टेडेन्ट्स इन रिलेशन टू इन्सटीट्यूशन एण्ड सैक्स, जनरल ऑफ साइकोलॉजीकल रिसर्च, वोल्यूक (3), 1987, 197–201
- मलैया विद्यावतीः ''माध्यमिक शिक्षा : मैकमिलन बुक कम्पनी, नई दिल्ली।

♦❐♦